International Journal for Multidisciplinary Research
International Conference on Multidisciplinary Research & Studies 2023
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# पं. रामाश्रय झा (रामरंग) जी का व्यक्तित्व तथा सांगीतिक कृतीत्व

**प्रा.डॉ.प्रशांत झि.बागडे**

सहाय्यक प्राध्यापक, बाबाजी दाते कला आणि वाणिज्य,महाविद्यालय, यवतमाळ

**प्रस्तावना**

संगीत एक अलौकिक भाषा है, जिसके माध्यम से मानव हृदय कि विविध अभिव्याक्तियो को प्रदर्शित करता हैIसंगीत मे हमे हृदयानभुति कि अभिव्यक्ती का सम्यक क्षेत्र मिलता है और ध्वनी भाषा एवं पिंगल शास्त्र के त्रिगुणात्मक संयोग से यह अभिव्यक्ती उदात्त स्वरूप धारण कर मानव हृदय को स्पर्श करने कि अदभूत क्षमता प्रदान करती है Iसंगीत द्वारा जीवन प्रगती, निर्मलता, आत्मनुभूती एवं रस चार्वनो प्राप्त होती है I संगीत – कला ध्यान के समान हि व्यक्ती को आत्मदर्शी बनाती है Iसंगीत ऐसी कला है जो तत्वान्वेशी, तत्वचिंतक और तत्वदर्शी के समान स्थूल से सूक्ष्मता कि और तथा बाहर से भीतर कि और ले जाती है I हमारे देश के संगीत धरोहर को कई संगीतकारो, वाग्येकारो ने उन्नत किया है I हमारे देश के सांगीतिक उप्लाब्धियो में बहोतसे विद्वानो का योगदान हुवा है I हमारे सांगीतिक साम्मंदर मे भले ही पानी अपार है पर सच तो यही है कि वे कई विद्वान रुपी नादियो का उधार होता है I वैसे हीदेखा जाये तो हमारे अनेक बहुमोल संगीतरत्नो ने हमारे आज के संगीत विधा को उच्चत्तम स्थान पर ला कर रखा है I

**पं रामाश्रय झा (रामरंग) जी का व्यक्तित्व तथा कृतीत्व** -

वैसे हि हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रती समर्पित, विख्यात संगीतज्ञ पं. रामाश्रय झा (रामरंग) जी का सांगीतिक योगदान अतुलनीय है I पं. रामाश्रय झा जी ने अपने उपनाम रामरंग के नाम से संगीत जगत में प्रसिद्ध है I आप संगीत के उत्तम शिक्षक, श्रेष्ठ कलाकार, साधक, रचनाकार और वाग्येयकार के साथ साथ सफल आयोजक एवं कुशल प्रशासक आदि विभिन्न रूपो में विख्यात रहे है I आप एक चिंतनशील तथा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न संगीतज्ञ थेIसंगीतर के क्रियात्मक तथा शाश्त्रात्मक दोनोही पक्षो में निपुण थे I विख्यात संगीतज्ञ पं. रामाश्रय झा (रामरंग) जी का जन्म ११ अगस्त १९२८ इ तदनुसार भाद्र कृष्ण पक्ष तिथी को बिहार प्रदेश में दरभंगा जिल्हे के खजुरा नामक (जो अब मधुबनी जिले के अंतर्गत आता है) गावं मे हुआ I आप मिथीला निवासी एवं मैथिल ब्राम्हण थेIआप के पिता पं. सुखदेव झा संगीत प्रेमी थे, जिनके संगीत स्नेह के हि कारण पं रामाश्रय झा जी पांच वर्षो के आयु से हि संगीत कि ओर उन्मुख हुये I सर्वप्रथम आपने अपने पिता तत्पश्चात अपने चाचा पं. मधुसूदन झा से हार्मोनिंअम एवं गायन सिखना प्रारंभ कियाIइसके उपरांत श्री अवध पाठक जी से आपको गायन कि शिक्षा मिली I ऐसे तो आपने संगीत कि शिक्षा अनेक विद्वानो से ली, परंतु उच्च संगीत शिक्षा कि दृष्टी से पं. भोलानाथ भटजी से विधिवत संगीत शिक्षा दीक्षा प्राप्त कि, जिनके पास लगभग २५ वर्षो तक रहकर आपने धृपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, दादरा, टप्पा इन चारपट गायन शैलीयोकि विधिवत शिक्षा प्राप्त की I पं. भट्टजी के अतिरिक्त आपने स्वर्गीय बी. एन. ठकार (प्रयाग), उस्ताद हबीब खां (किराणा), पं. बि. एस. पाठक (प्रयाग) से भी संगीत कि शिक्षा प्राप्त की I

पं. रामाश्रय झा जी सन १९५४ से प्रयाग मे स्थायी रूप से रहने लगे I संगीत शिक्षक के रूप मे सर्वप्रथम सन १९५५ मे लुकरगंज संगीत महाविद्यालय प्रयाग, सन १९६० मे प्रयाग संगीत समिती इलाहाबाद, सन १९६८ मे इलाह्बाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के संगीत विभाग मे आपकी नियुक्ती हुई I इलाह्बाद के विश्वविद्यालय के संगीत एवं ललित कला विभाग मे पं. रामरंग जी प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर रहकर सन १९८० से आपके संरक्षण मे सुझ-बुझ एवं प्रतिष्ठा के साथ लगभग दस वर्षो तक विभाग के कार्य का संचालन किया I

पं. रामाश्रय झा जी उच्च कोटी के संगीत शिक्षक के साथ साथ एक श्रेष्ठ गायक व आकाशवाणी के प्रथम श्रेणी के कलाकार भी थे I आपके अनेक शिष्य आकाशवाणी के प्रथम श्रेणी के कलाकार एवं उत्तम शिक्षक भी है I जिसमे से कूछ इस प्रकार है – डॉ. गीता ब्यानर्जी, श्रीमती कमला बोस, श्रीमती शुभा मौदगल्य, श्रीकांत वैश्य, श्री. कामता खन्ना, श्रीमती सत्या दास, डॉ. शिप्रा सान्याल , डॉ. रामशंकर सिंह, श्रीमती संगीता सक्सेना, डॉ. इला मालवीय, श्री. शांताराम कशाळकर, श्री. राजन परिकर आदी अनेक शिष्य शिष्याओ ने संगीत कि शिक्षा प्राप्त की Iपं. रामरंग जी उदार प्रवृत्ती के उत्तम शिक्षक एवं गायक होने के साथ-साथ संगीत शास्त्र के श्रेष्ठ ज्ञाता भी थे I आपके द्वारा रचित पुस्तक "अभिनव गीतांजली" पाच भागो मे प्रकाशित हो चुकी है I इसके चार भागो मे लगभग डेढ सों प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध रागो का विषद विवेचन एवं नई पुरानी बंदिशो का अभूतपूर्व संकलन है I अभिनव गीतांजली का पंचम भाग अन्य भागो मे विशेष महत्व पूर्ण है क्यो कि रागांग रागो के विभिन्न तथ्यो को ध्यान मे रखकर यह भाग लिखा गया है I इस भाग मे प्रचलित एवं अप्रचलित तथा कूछ नवीन रागो को मिलाकर लगभग ७२ रागो कि विस्तृत व्याख्या तथा नई व पुरानी रचनाओ का अभूतपूर्ण संग्रह है जो सभी वर्गो के साधको के लिये अत्यंत उपयोगी है I पं. रामाश्रय झा जी ने चार पट कि गायन शैली मे अपने उपनाम 'रामरंग' के नाम से ध्रुवपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, दादरा, टप्पा एवं लक्षणगीत एवं तराना, त्रीवट, चतुरंग रागमाला के प्रचलित तथा अप्रचलित रागो मे लगभग दो हजार बंदिशो कि रचना कि है I म्युझिक टुडे जैसी अंतरराष्ट्रीय ख्याती प्राप्त कॅसेट कंपनियो मे विश्वविख्यात कलाकारो ने पं. झा जी के बंदिशो को गाया है I

पंडितजी ने ध्रुवपद और ख्याल गायन शैली मे संगीत रामायण कि भी रचना कि है, यह विलक्षण तथा संगीत जगत के लिये अत्यंत उपयोगी एक अमुल्य उपलब्धी है I सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सभी रचनाये शास्त्रीय संगीत के विभिन्न रागो और तालो मे लिपीबद्ध कि गई है I संगीत रामायण मे लगभग पाच सौ रचनाये है I संगीत रामायण का प्रथम भाग बाल कांड'उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रकाशित किया गया है Iपं. रामाश्रय झा जी ने 'वारीनदास संगीत परिषद कि स्थापना करके इस संस्था के माध्यम से प्रयाग नगर मे अनगिनत संगीत समारोह का आयोजन कर नगर एवं बाह्य युवा कलाकारो को प्रोत्साहित करने का अभूतपूर्व कार्य किया I इसके अतिरिक्त आपने इलाहाबाद 'विश्वविद्यालय संगीत संमेलन' जैसे एतिहासिक संगीत संमेलन को तीस वर्ष बाद पुनः सन १९८० से प्रारंभ कर प्रतिवर्ष अखिल भारतीय स्तर पर संगीत संमेलन का सफल आयोजन कराया जिस मे देश के अनेक सन्मानित एवं सुप्रसिद्ध कलाकारोने भाग लिया I सन १९८६ के फरवरी माह मे सर्व प्रथम संगीत विभाग मे पंडित जी ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से 'राष्ट्रीय संगीत परिषद संवाद का आयोजन कराया, जिसे देश के अनेक सन्मानित एवं सुप्रसिद्ध कलाकारोने भाग लिया जो संगीत विभाग के इतिहास मे वे पहला अवसर था जब इतने उचे स्तर पर संगीत परिसंवाद का सफल आयोजन हुवा और परिसंवाद मे विश्वविद्यालय के संगीत शिक्षा कि समस्याओ के विषय पर देश के उत्कृष्ट विद्वानो से विभिन्न दृष्टीकोन से संगीत शिक्षा के समस्याओ के निराकरण हेतू अपने विचार व्यक्त कर आयोजन को सफल बनाने मे अपना अमुल्य सहयोग प्रदान किया I जहातक प्रशासनिक कार्य करने कि बात ही उसमे भी पं. जी बडे ही सिद्धहस्त थे I

सन १९८२ मे उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार के अंतर्गत पंडित रामाश्रय झा जी को पुरस्कृत कर 'रत्न सदस्यता' प्रदान कि I इसके अतिरिक्त संगीत लेखन कार्य हेतू पंडित जी को 'काका हाथरसी' सन्मान के अंतर्गत १५००० रुपये की धनराशी प्रदान की गाई थी I देश कि सर्वोच्च ITC ने भी सन्मानित कर पंडितजी को ५१००० रुपये कि धनराशी प्रदान कि, मुंबई मे भी स्वरसाधना रत्न अवार्ड सन २००० मे प्रदान किया गया, इसके अतिरिक्त देश मे अनगिनत सन्मानित संगीत संस्थाओ ने भी सन्मानित किया I देश मे अनेक संगीत संमेलनो तथा संगीत गोष्ठीयो मे पंडित जी के शास्त्रीय गायन के सफल कार्यक्रम संपन्न हो चुके है, जिसकी श्रोताओ, विद्वानो ने भुरी-भुरी प्रशंसा की है I पं. रामाश्रय झा मुख्य रूप से ख्याल, ठुमरी, दादरा, और टप्पा गायन मे तो सिद्धहस्त थे ही साथ हि ध्रुवपद, धमार, तराना, तिरवट, चतुरंग, रागमाला, रागसागर, रागतालसागर, भजन और लोकगीत को भी अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत करते थे I भारतीय संगीत जगत को

अनेक स्वरचित बंदिशो तथा नवीन रागो की अमूल्य निधी प्रदान कर १ जनवरी २००९ को वे स्वर्गवासी हो गये, परन्तु अपने सांगीतिक कृतियो के द्वारा आप संगीत जगत मे सदैव के लिये अमर रहेंगे I

**संदर्भग्रंथ सूची**

१. अभिनव गीतांजली भाग - ५ - पं. रामाश्रय झा - संगीत सदन प्रकाशक, इलाहाबाद
२. अभिनव गीतांजली भाग - ३ - पं. रामाश्रय झा - संगीत सदन प्रकाशक, इलाहाबाद
३. मला भावलेले संगीतकार - अशोक दा. रानडे - राजहंस प्रकाशन, पुणे.
४. संगीत कला विहार जुलाई १९७८ – मिरज मुंबई
५. भारतीय संगीत एक एंतिहासिक विश्लेषण – अनुभव पब्लिकेशन , इलाहाबाद
६. संगीत कला विहार अगस्त १९९० – मिरज मुंबई